वही हमारा कृष्ण

लेखक

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद

ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय [रज़ि]

Wahi Hamara Krishan

BY

Hazrat Mirza Basheeruddin Mahmood Ahmad

Khalifatul Masih IInd[ra]

(Hindi Translation)

Published in India in 2017 By Nazarat Nashr-o-Isha'at
Sadr Anjuman Ahmadiyya Qadian. 143516-Punjab, India
Printed at Fazl-e-Umar Printing Press Qadian.
Copies: 2000

वही हमारा कृष्ण

लेखक
सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद
ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय रज़ि

नाम पुस्तक : वही हमारा कृष्ण
Name of book : Wahi Hamara Krishna
लेखक : हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद ख़लीफ़तुल मसीह द्वितीय[रज़ि०]
Writer : Hazrat Mirza Bashiruddin Mahmood Ahmad Khalifatul Massiah II (Razi)
अनुवादक : डॉ अन्सार अहमद, एम.ए., एम.फिल, पी एच,डी, पी.जी.डी.टी., आनर्स इन अरबिक
Translator : DR. Ansar Ahmad, M.A., M.Phil, PH.D, P.G.D.T., Hons in Arabic
टाईप, सैटिंग : नईम उल हक़ कुरैशी
Type, Setting : Naeem Ul Haque Qureshi
संस्करण : प्रथम संस्करण (हिन्दी) 2017 ई०
Edition : 1st Edition (Hindi) 2017
संख्या, Quantity: 1000
प्रकाशक : नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher : Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, Distt. Gurdaspur, (Punjab) 143516
मुद्रक : फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर
Printed at : Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian Distt. Gurdaspur (Punjab) 143516

प्रकाशक की ओर से

सय्यदना हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहिब मुस्लेह मौऊद रज़ि० इमाम जमाअत अहमदिया ने यह लेख हिन्दू भाइयों के लिए 1936 ई. में लिख था। जिसमें उनको एकेश्वरवाद की ओर लौटने और समस्त मानवजाति से प्रेमपूर्वक व्यवहार करने तथा इस युग के अवतार को स्वीकार करने की आवश्यकता पर अत्यंत सहानुभूति पूर्वक ध्यान आकर्षित करवाया। यह लेख 29 मार्च 1936 ई. को ट्रेक्ट के रूप में और 12 अप्रैल 1936 ई. को अख़बार अल्फज़ल क़ादियान में प्रकाशित हुआ। मज्लिस शूरा भारत 2017 ई. की सिफारिश पर सय्यदना हुज़ूर अनवर की स्वीकृति से इस पुस्तिका का भारत की क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित किया जा रहा है। पाठकगणों की सेवा में इसका हिंदी अनुवाद प्रस्तुत है।

नाज़िर नश्र व इशाअत
क़ादियान

अऊज़ुबिल्लाहिमिनश्शैतानिर्रजीम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिलकरीम

ख़ुदा के फ़ज़्ल और रहम के साथ, हुवन्नासिर

वही हमारा कृष्ण

प्यारे हिन्दू भाइयो! हम एक देश में रहते हैं, सामान्य तौर पर एक ही भाषा बोलते हैं, परमात्मा का प्रकाश देने वाला सूर्य हम सब को एक ही प्रकाश देता है, उसका सुन्दर चन्द्रमा हम सब को बिना किसी भेदभाव के प्रेम भरी नज़रों से देखता है। रात का अंधकार जब सारी दुनिया पर छा जाता है जब हमारी अपनी ज्ञानेन्द्रियाँ भी हम को छोड़ जाती हैं और दिन का थका हुआ शरीर निष्प्राण होकर चारपाई पर गिर जाता है उस समय ख़ुदा के फ़रिश्ते अपने प्रेम के परों को फैला कर हम सब पर अपनी छाया कर देते हैं और हिन्दू-मुसलमान में अन्तर नहीं करते। हिमालय की चोटियों पर पड़ी हुई बर्फ जब सूर्य की गर्मी से पिघलती है और नदियों के जलों को उनके किनारों तक बुलन्द कर देती है जब ख़ूबसूरत गंगा और मनमोहक यमुना अपने उछलने वाले जलों को प्यास से सूख चुके खेतों में लाकर डालती है वह कभी नहीं देखती कि कौन मुसलमान है और कौन हिन्दू! वह आग जो गन्द को जला कर राख कर देती है और इन्सानी नर्क को बुझाने के काम आती है, हिन्दू की भाजी और मुसलमान के सालन के पकाने में उसने कभी अन्तर नहीं किया। फिर जब परमात्मा की नेमतों ने हम सब में कोई अन्तर नहीं रखा हमारा उससे मुहब्बत क्यों अन्तर वाला हो? सौतेले पिता और उस सगे पिता के प्रेम में अन्तर हो सकता है परन्तु अपने पिता के मुहब्बत में बच्चे कभी अन्तर नहीं रखते। वे आपस में लड़ सकते हैं किन्तु अपने पिता और अपनी माता से प्रेम में एक-दूसरे से आगे

बढ़ने की कोशिश करते हैं।

परन्तु हमें क्या हो गया है कि हम आपस की लड़ाइयों में अपने परमात्मा को भी भूल गए हैं। हम यह भी तो नहीं सोचते कि उसने हमारे पापों को देखकर भी हम में अन्तर नहीं किया तो हम उसके उपकार देखते हुए उस से अन्तर क्यों करें? मूर्ख बच्चे जब आपस में लड़ रहे होते हैं माँ की एक आवाज़ सुन कर एक-दूसरे का गला छोड़ कर माँ की ओर दौड़ पड़ते हैं। वह्शी कबूतर तक जिसकी प्रकृति में आज़ादी है अपने दाना डालने वाले की आवाज़ को सुनकर अपनी आज़ादी को भूल जाता है और डरबे की तंग और अंधकारपूर्ण जगह पर अपनी आज़ाद उड़ान को क़ुर्बान कर देता है, क्योंकि दाना डालने वाले की आवाज़ का इनकार उस से नहीं हो सकता! फिर हे प्यारे हिन्दू भाइयो! क्यों तुम उस आवाज़ की ओर ध्यान नहीं देते जो तुम्हारे परमेश्वर ने समस्त संसार को अपने चारों ओर एकत्र करने के लिए बुलन्द की है, क्या केवल इसलिए कि वह एक मुसलमान के मुंह से निकली है? परन्तु क्या तुम भूल गए हो कि परमात्मा की कोई चीज़ प्रतिबंधित नहीं होती। हिन्दू और मुसलमान तथा ईसाई सब नाम इन्सानों के हैं। जब परमात्मा किसी को चुन लेता है तो फिर वह क़ौमों के बन्धन से आज़ाद हो जाता है, वह किसी विशेष क़ौम का नहीं रहता, हर क़ौम उसकी हो जाती है और वह सब का हो जाता है।

हे हिन्दू भाइयो! इसी प्रकार इस युग का अवतार किसी विशेष क़ौम का नहीं। वह महदी भी है क्योंकि मुसलमानों की मुक्ति का सन्देश लाया है, वह ईसा भी है क्योंकि ईसाइयों के मार्ग-दर्शन का सामान लाया है, वह निःकलंक अवतार भी है क्योंकि वह तुम्हारे लिए हाँ हे हिन्दू भाइयो! तुम्हारे लिए परमेश्वर के प्रेम की चादर का उपहार लाया है।

तुम पुराने बुज़ुर्गों की सन्तान हो तुम को उचित तौर पर गर्व है कि

हमारे बाप-दादा सब से प्राचीन सभ्यता रखते थे। तुम एक ऐसी फ़िलास्फ़ी को प्रस्तुत करते हो कि तुम्हारा इतिहास इस से पहले किसी फ़िलास्फ़ी को स्वीकार ही नहीं करता, परन्तु क्या तुम उन प्राचीन शरीरों को उस प्राचीन रूह से खाली रखोगे जो परमात्मा की ओर से आती है जो सब से प्राचीन और सब से पुराना है? प्राचीन चीज़ें सम्मान योग्य होती हैं परन्तु तभी तक जब तक कि उनमें प्राण होते हैं। तुम्हारे माता-पिता जितने बूढ़े होते जाते हैं तुम उनका अधिक सम्मान करते हो, किन्तु जब वह मृत्यु पा जाते हैं तो तुम उनको चिता पर लिटा कर जला देते हो। तो पुरानी चीज़ सम्मान योग्य है परन्तु जब तक उसमें प्राण हो। फिर तुम अपनी पुरानी तथा सम्मान योग्य चीज़ों में प्राण डालने का प्रयास क्यों नहीं करते?

ख़ुदा तआला का यह क़ानून है कि जिन को वह एक बार सम्मान देता है उनके साथ हमेशा संबंध निभाता है और वे उसकी ओर लौट कर नेकी की रूह प्राप्त करें तो उन्हें दूसरों से अधिक सम्मान प्रदान करता है। अतः यदि तुम को प्राचीन सभ्यता और पुरानी फ़िलास्फ़ी का विरसा मिला है तो उसे परमेश्वर की रूह से जीवित करो ताकि वह इस समय की आवश्यकतानुसार रूप धारण करके दुनिया के लिए लाभप्रद बने।

प्यारे भाइयो! जीवित और मुर्दे में यही अन्तर होता है कि जीवित समय के अनुसार उन्नति करता है और मुर्दा एक हाल पर रहता है और अन्त में सड़ने लग जाता है। क्या तुम ने कभी विचार किया कि तुम्हारी लापरवाही से तुम्हारी सभ्यता और तुम्हारे धर्म पर भी युग ने अपना प्रभाव डालना प्रारंभ कर दिया है। थोड़ा विचार तो करो कि परमात्मा के मुकाबले पर तुम में कितने देवता निकल आये हैं? तनिक अपनी पुस्तकों को उठा कर तो देखो कि कृष्ण जी और राम चन्द्र जी ने भी किसी मूर्ति के आगे माथा झुकाया था? क्या वे भी किसी मूर्ति के माथे पर सिन्दूर लगाने गए

थे? क्या उन्होंने भी शिव जी और पार्वती के आगे हाथ जोड़े थे? यह परमात्मा से दूरी और ग़ैरों के आगे झुकने का विचार आप लोगों में कहाँ से आया?

क्यों उसकी मुहब्बत जो सबसे प्रिय है ठण्डी होती गई? और स्वामी का स्थान सेवकों को दे दिया गया? अन्ततः इसका कारण कुछ तो होना चाहिए। जो काम कृष्ण जी और राम चन्द्र जी ने न किया वह आप क्यों करने लगे?

जिस मार्ग पर पवित्र अवतार नहीं चले थे आप उस मार्ग पर क्यों चलने लगे? इसका कारण यह है कि परमेश्वर की जीवन दायिनी ताज़ा बातों से आप ने अपने कान बन्द कर लिए और पुराने शरीर से तो चिमटे रहे परन्तु रूह को निकल जाने दिया। गुलाब का फूल जब तक टहनी पर रहता है वह कैसा खुशबूदार होता है, वह कैसा हरा-भरा होता है, वह कैसा नर्म और कोमल होता है परन्तु जब उसे उतार कर लोग सीने या सिर पर लगा लेते हैं वह थोड़े ही समय में कैसा शुष्क और बेजान हो जाता है, उसकी ख़ुशबू किस प्रकार उड़ जाती है।

आख़िर इसका कारण इसके अतिरिक्त क्या है कि वह इस जीवनदायिनी संबंध से अलग कर दिया जाता है जो उसकी सब ताज़गी का कारण था। इसी प्रकार हे प्यारे भाइयो! फिलास्फी और धर्म अच्छी चीज़ें हैं परन्तु उनकी सब सुन्दरता उसी समय तक रहती है जब तक उनकी जड़ उस जीवनदायिनी वृक्ष से मिली रहती है जिसे परमात्मा कहते हैं। जब उस फूल को उस से अलग कर लिया जाता है उसकी सब सुन्दरता मिट्टी में मिल जाती है। वह असली फूल इतना सुन्दर भी तो नहीं रहता जितना कपड़े या कागज़ का बना हुआ फूल।

अतः हे भाइयो! आप लोगों को आध्यात्मिक (रूहानी) जीवन के

बारे में जो कुछ सामने आया है वह केवल उस संबंध के टूट जाने के कारण सामने आया है। यदि कृष्ण जी और रामचन्द्र जी की तरह उनके बाद आने वाले लोग भी परमात्मा से संबंध रखते तो कभी यह नौबत न पहुँचती कि परमात्मा के श्रेष्ठतम द्वार को छोड़ कर पवित्र ऋषियों की सन्तान, मूर्तियों और देवियों के आगे झुकती। जिस माथे को परमेश्वर ने चूमने के लिए बनाया था कितने अफ़सोस का स्थान है कि वह अपने से भी अद्ना चीज़ों के सामने झुकता है, वे नज़रें जो ऊंचा उठने के लिए बनी थीं अफ़सोस कि पाताल की ओर झुकी हुई हैं। परन्तु क्यों? क्या इसलिए कि उनके लिए अन्य कोई उपाय संभव नहीं। नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता। क्या परमेश्वर कृष्ण जी और रामचन्द्र जी की संतानों तथा सेवकों को हमेशा के लिए छोड़ सकता है? कदापि नहीं। अतः उसने हिन्दुओं की उन्नति और सुधार के लिए निःकलंक अवतार को भेज दिया जो ठीक इस युग में आया है जिस युग की कृष्ण जी ने पहले से सूचना दे रखी थी। उसने परमेश्वर के ताज़ा निशानों से दुनिया को परमेश्वर के जीवित एवं सामर्थ्यवान होने का प्रमाण दे दिया है। ऐसा प्रमाण कि कोई व्यक्ति उसका इन्कार नहीं कर सकता और अब हर व्यक्ति जो परमात्मा से प्रेम करना चाहता है उसके माध्यम से अपने ईश्वर से मिल सकता है तथा उन इनामों को प्राप्त कर सकता है जो प्राचीन ऋषि-मुनि प्राप्त किया करते थे, क्योंकि हमारा ख़ुदा कंजूस नहीं कि एक को दे और दूसरे को न दे और न उसका ख़ज़ाना सीमित है कि जो कुछ पहले कर सकता था अब नहीं कर सकता।

इस निःकलंकी अवतार का नाम मिर्ज़ा गुलाम अहमद है जो क़ादियान, ज़िला-गुरदासपुर में प्रकट हुए थे। ख़ुदा ने उनके हाथ पर हज़ारों निशान दिखाए हैं और उनके द्वारा वह पुनः संसार को न्याय तथा

इंसाफ से भरना चाहता है। जो लोग उन पर ईमान लाते हैं उनको ख़ुदा तआला बड़ा प्रकाश प्रदान करता है और उनकी दुआएं सुनता है और उनकी सिफ़ारिशों पर लोगों के कष्टों को दूर करता है तथा सम्मान प्रदान करता है। आप को चाहिए कि उनकी शिक्षा को पढ़ कर प्रकाश प्राप्त करें और यदि कोई संदेह हो तो परमात्मा से दुआ करें कि हे परमात्मा! यदि यह आदमी जो तेरी ओर से होने का दावा करता है और अपने आप को नि:कलंक अवतार कहता है, अपने दावे में सच्चा है तो उसको मानने का हमें सामर्थ्य दे और हमारे हृदयों को उस पर ईमान लाने के लिए खोल दे। फिर आप देखेंगे कि परमात्मा अवश्य आपको परोक्ष (ग़ैब) के निशानों से उसकी सच्चाई पर विश्वास करा देगा और यदि आप यह वादा करें कि सच्चाई के खुलने पर आप उसके दावे को स्वीकार करके अपने पैदा करने वाले और मालिक से सुलह कर लेंगे तो आप सच्चे दिल से मेरी ओर आएँ और अपने कष्टों के निवारण के लिए दुआ कराएँ। अल्लाह तआला आप के कष्टों को दूर कर देगा तथा मनोकामनाओं को पूरा करेगा परन्तु उसी नियम के अनुसार जो उसका कृष्ण जी तथा राम चन्द्र जी के समय था परन्तु शर्त यह होगी कि फिर आप संसार के प्रेम को त्याग कर उसके साथ दृढ़ संबंध पैदा कर लें और उसकी आवाज़ को अपने शेष मित्रों और परिजनों तक पहुंचाएं और अल्लाह तआला के प्रेम को पैदा करने के लिए उसने जो उपाय बताए हैं उनका पालन करते हुए परमात्मा के सच्चे आशिक और निष्कपट सेवक बन जाएँ। परमात्मा आप के साथ हो।

विनीत

मिर्ज़ा महमूद अहमद